डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्. ए., बी. एड्., पीएच्. डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि *कु. वंदना शिवाजीराव पाटील* द्वारा प्रस्तुत *"प्रेमचंद के मानसरोवर भाग-1 कहानी संग्रह में चित्रित नारी जीवन"* लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - 31 दिसंबर, 2001.

31.12.2001

(*डॉ. अर्जुन चव्हाण*)

Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004

डॉ. सौ. शशिप्रभा जैन
प्रपाठक एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि *कु. वंदना शिवाजीराव पाटील* ने मेरे निर्देशन में ***''प्रेमचंद के मानसरोवर भाग-1 कहानी संग्रह में चित्रित नारी जीवन''*** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

शोध-निर्देशिका

स्थान :- कोल्हापुर.

तिथि :- 31 दिसंबर, 2001.

(डॉ. सौ. शशिप्रभा जैन)

प्रख्यापन

"प्रेमचंद के मानसरोवर भाग- 1 कहानी संग्रह में चित्रित नारी जीवन" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

स्थान : कोल्हापुर .

तिथि : 31 दिसंबर, 2001.

(कु. वंदना शिवाजीराव पाटील)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा -

मुझे बचपन से ही कहानियाँ पढ़ने, सुनने का शौक रहा। इसी कारण जब बी. ए. तथा एम्. ए. में किसी भी साहित्यकार की कोई कहानी मैं पढ़ती थी तब उस साहित्यकार की अन्य रचनाएँ पढ़ने की उत्सुकता मेरे मन में जागृत हो जाती थी। कहानी पढ़ने की रुचि ने मुझे प्रेमचंद की कहानियों की ओर आकर्षित किया। उनकी 'बड़े घर की बेटी', 'कफन', 'कुसुम', 'आहुति' आदि कहानियों में नारी के अंतर्मन को गहराई से नापा गया है यह देखकर प्रेमचंद की अन्य कहानियाँ पढ़ने की उत्सुकता मेरे मन में जागृत हुई। मैंने जब प्रेमचंद की मानसरोवर भाग-1 की कहानियाँ पढ़ी तब मेरे मन में इस संदर्भ में शोध करने की इच्छा हुई और मैंने शोध-निर्देशिका डॉ. शशिप्रभा जैन जी से पूछा कि क्या मैं इस विषय में अपना लघु शोध-प्रबंध लिख सकती हूँ ? उन्होंने मुझे सहर्ष स्वीकृति दे दी।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन और विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय - प्रेमचंद : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में साहित्य सम्राट प्रेमचंद के व्यक्तित्व और कृतित्व में उनका जन्म, बचपन, परिवार, शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि का चित्रण करते हुए उन्हें अपने जीवन में कौन-कौन-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और अंत में किस प्रकार बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई इसका चित्रण किया है। कृतित्व में उनके संपूर्ण रचना संसार का संक्षिप्त परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय - विवेच्य कहानियों का परिचयात्मक विवेचन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मानसरोवर भाग-1 की कहानियों का परिचय देते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

तृतीय अध्याय - विवेच्य कहानियों का नारी चित्रण

प्रस्तुत अध्याय में नारी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए, नारी का वैदिक युग से आज तक के विकास को चित्रित किया है। विशेष रूप से प्रेमचंद युग की नारी की विभिन्न स्थितियों का उल्लेख किया है।

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य कहानियों में चित्रित नारी के विभिन्न रूप

प्रस्तुत अध्याय में नारी के पारिवारिक रूपों में पत्नी, माता, बेटी, भाभी, बहू, सास, चाची, जेठानी आदि रूपों का और परिवारोत्तर रूपों में प्रेमिका, नौकरानी, स्वयंसेविका आदि का समग्र विवेचन किया है।

पंचम अध्याय - विवेच्य कहानियों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ

प्रस्तुत अध्याय में नारी से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इन समस्याओं में प्रमुखतः वैवाहिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आदि समस्याओं का समग्र रूप से विवेचन किया है।

उपसंहार

सभी अध्यायों का निचोड़ या सार अंत में उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ में आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

ऋणनिर्देश

जीवन में कुछ पल ऐसे होते हैं, जिनसे उऋण होना संभव नहीं होता और होने की इच्छा ही होती है। इसी तरह का ऋण मुझ पर मेरी गुरुवर्या डॉ. श्रद्धेय शशिप्रभा जैन जी की कृपा का है। उनके आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफल प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध है। प्रस्तुत प्रबंध उनके आशिर्वाद एवं कृपापूर्ण सक्षम निर्देशन में लिखा गया है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद भी आपने निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मुझे कभी हतोत्साहित होने नहीं दिया। आपके आत्मीयपूर्ण निर्देशन ने शोध-कार्य के अंतर्गत मेरी घरेलू निजी कठिनाइयों को भी कभी अनुभव नहीं होने दिया, बल्कि आपसे मुझे हर बार नया उत्साह मिलता गया। अतः आपके ऋण से मैं उऋण होना नहीं चाहती, क्योंकि आपकी सहृदयता को आभार के चंद लब्जों में बाँधकर मैं सीमित नहीं करना चाहती, परंतु आपकी इस कृपा का एहसास मुझे जीवन में हमेशा रहेगा। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं सदैव अभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. पांडुरंग पाटील जी का आशीर्वाद और प्रेरणा मेरे साथ रही अतः उनके प्रति मैं सविनय आदर प्रकट करती हूँ।

आदरणीय प्रा. सुरेखा शहापुरे, प्रकाश चिकुर्डेकर, गिरिश काशीद, अशोक बाचुळकर जी ने मेरे शोध-कार्य में रुचि दिखाकर उचित सुझाव देते हुए मुझे प्रोत्साहित किया अतः उनकी मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने का सारा श्रेय मैं अपने माता-पिता को देती हूँ।

मेरे शोध-कार्य में सदिच्छापूर्ण सहयोग की इच्छा रखनेवाली मेरी सहेलो कु. सगुणा पाटील, छाया पवार, सौ. निशा पवार की मैं हृदय से आभारी हूँ। साथ ही अमोल कासार, विजय शिंदे, इन्नुस शेख, संतोष माने आदि हितचिंतकों ने सामग्री संकलन में निस्वार्थ सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

महावीर महाविद्यालय के ग्रंथालय से यह लघु शोध-प्रबंध पूरा करने के लिए अपार सामग्र मिली, मैं ग्रंथालय विभाग की आभारी हूँ।

शोध-ग्रंथ के रूप में टंकलेखक श्री. अलताफ मोमीन जी की भी आभारी हूँ।

जिन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों ने मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से मदद की उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

शोध-छात्रा

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - दिसंबर, 2001.

(कु. वंदना शिवाजीराव पाटील)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और कृतित्व पृ. 1 - 13

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म और परिवार

1.1.2 बचपन

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 विवाह

1.1.5 नौकरी

1.1.6 अंतिम दिन

1.2 कृतित्व

1.2.1 उपन्यासकार प्रेमचंद

1.2.1.1 प्रतिज्ञा

1.2.1.2 वरदान

1.2.1.3 सेवासदन

1.2.1.4 प्रेमाश्रम

1.2.1.5 निर्मला

1.2.1.6 रंगभूमि

1.2.1.7 कायाकल्प

1.2.1.8 गबन

1.2.1.9 कर्मभूमि

1.2.1.10 गोदान

1.2.1.11 मंगलसूत्र

1.3 कहानीकार प्रेमचंद

1.3.1 राजनीतिक कहानियाँ

1.3.2 सामाजिक कहानियाँ

1.3.3 मनोवैज्ञानिक कहानियाँ

1.3.4 ऐतिहासिक कहानियाँ

1.4 प्रेमचंद के कहानीसंग्रह

1.5 नाटककार प्रेमचंद

1.5.1 संग्राम

1.5.2 कर्बला

1.5.3 प्रेम की वेदी

1.6 पत्रकार प्रेमचंद

1.7 निबंधकार प्रेमचंद

1.8 प्रेमचंद का बाल साहित्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - विवेच्य कहानियों का परिचयात्मक विवेचन पृ.14 - 40

2.1 अलग्योझा

2.2 ईदगाह

2.3 माँ

2.4 बेटों वाली विधवा

2.5 बड़े भाई साहब

2.6 शांति

2.7 नशा

2.8 स्वामिनी

2.9 ठाकुर का कुँआ

2.10 घरजमाई

2.11 पूस की रात

2.12 झाँकी

2.13 गुल्ली-डंडा

2.14 ज्योति

2.15 दिल की रानी

2.16 धिक्कार

2.17 कायर

2.18 शिकार

2.19 सुभागी

2.20 अनुभव

2.21 लांछन

2.22 आखरी हिला

2.23 तावान

2.24 घासवाली

2.25 गिला

2.26 रसिक संपादक

2.27 मनोवृत्ति

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय विवेच्य कहानियों का नारी चित्रण पृ. 41- 63

3.1 नारी का विकास

3.1.1 वैदिक काल

3.1.2 सूत्र तथा महाकाव्य युग की नारी

3.1.3 स्मृति युग की नारी

3.1.4 मध्य युग की नारी

3.1.5 उत्तर मध्य युग

3.1.6 आधुनिक युग

3.2 प्रेमचंद युग में नारी की स्थिति

3.2.1 सामाजिक स्थिति

3.2.2 आर्थिक स्थिति

3.2.3 राजनीतिक स्थिति

3.3. *नारी चित्रण*

3.3.1 सफल दांपत्य जीवन

3.3.2 असफल दांपत्य जीवन

3.3.3 नारी और मातृत्व

3.3.4 नारी और प्रेम

3.3.5 नारी और वैधव्य

3.3.6 नारी और राष्ट्रीय जागृति

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य कहानियों में चित्रित नारी के विभिन्न रूप पृ 64-87

4.1 *नारी के विभिन्न रूप*

4.1.1 नारी के पारिवारिक रूप

4.1.1.1 पत्नी

4.1.1.2 माता

4.1.1.3 बेटी

4.1.1.4 भाभी

4.1.1.5 बहू

4.1.1.6 सास

4.1.1.7 चाची

4.1.1.8 जेठानी

4.1.2 परिवारेत्तर नारी के रूप

4.1.2.1 प्रेमिका

4.1.2.2 नोकरानी

4.1.2.3 स्वयंसेविका

4.1.2.4 साहित्यिक

4.1.2.5 स्वाभिमानी

4.1.2.6 देशप्रेमी

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - विवेच्य कहानियों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ पृ.88 - 109

5.1 ***वैवाहिक समस्याएँ***

5.1.1 बाल विधवा समस्या

5.1.2 अनमेल विवाह

5.1.3 अंतर्जातीय विवाह

5.1.4 पुनर्विवाह

5.2 ***पारिवारिक समस्या***

5.2.1 दांपत्य जीवन

5.2.2 सास-बहू कलह

5.3 ***सामाजिक समस्या***

5.3.1 दहेज

5.3.2 वेश्या

5.3.3 विमाता

5.3.4 विधवा

5.3.5 कुरूपता

5.3.6 नारी शोषण

5.4 ***आर्थिक समस्या***

5.5. ***मनोवैज्ञानिक समस्या***

5.6 ***राजनीतिक समस्या***

निष्कर्ष

उपसंहार *पृ. 110-114*

संदर्भ ग्रंथ सूची *पृ. 115-118*